1

530

drishti

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-11

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-24 **HL-2411**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

नाम (Name): Gaurav Chhimwal

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): 8

ई-मेल पता (E-mail address): [redacted]

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 20 Aug 2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

8	5	0	0	8	8	0

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

---

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड - क

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) सिद्ध-साहित्य में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप

खड़ी बोली का वास्तविक विकास 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दिखाई देता है। हालांकि इसके आरंभिक प्रयोग के उदाहरण सिद्ध साहित्य में दिखाई देते हैं।

आदिकालीन साहित्य में सिद्ध साहित्य का अपना विशेष महत्व है। सिद्धों ने अपनी सांप्रदायिक मान्यताओं का प्रचार-प्रसार करने के लिए जो साहित्य रचा उसे सिद्ध साहित्य कहते हैं। सिद्धों की संख्या 84 मानी गयी है जिसमें प्रमुख हैं - सरहपा, कण्हपा, लुईपा इत्यादि।

सिद्धों की भाषा में खड़ी बोली मूलतः शाब्दिक स्तर पर उपस्थित है। उदाहरण के लिए -

"पंडिअ सअल सत्य बक्खाणइ,
देहहिं बुद्ध बसंत न जाणइ।।"

drishti | दृष्टि The Vision

प्रस्तुत उदाहरण में खड़ी बोली की निम्न प्रवृत्तियाँ दिखती है -

(क) 'ण' का प्रयोग, 'न' के स्थान पर

(ख) 'देहहिं' में अनुस्वार का प्रयोग,

इसी तरह सरहपा के निम्नलिखित दोहे में खड़ी बोली का स्पष्ट आभास होता है -

"जहि मण पवण न संचरहि,
रवि ससि णाह पवेस।
तहि बढ़ चित्त विसाम करु,
सरहें कहहिं उवेस।"

स्पष्ट है कि सिद्ध साहित्य में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप स्पष्ट रूप से लक्षित होता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) 'बुंदेली' बोली

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

बुंदेली, बोली पश्चिमी हिंदी उपभाषा वर्ग की एक बोली है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से माना गया है।

बुंदेली बोली की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं →

(क) ट, ठ, ड, ढ व्यंजनों की प्रधानता, इसके कारण इस बोली में ओज गुण अधिक है।

(ख) इस बोली में वीरता प्रधान काव्य की रचना अधिक हुई है, इसका प्रमुख कारण है कि इसमें ओज गुण की अधिकता

(ग) अनुस्वार तथा अनुनासिक की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट दिखाई देती है।

(घ) औकारान्तता पर बल।

(ङ) व → ब के रूप में।

(च) महाप्राण ध्वनियों के महाप्राणीकरण पर बल।

drishti | दृष्टि The Vision

(ह) व्याकरणिक स्तर पर देखें तो परसर्गों का उपयोग अधिक है।

(ज) लिंग व्यवस्था - दो लिंग
पुल्लिंग, स्त्रीलिंग

(झ) वचन व्यवस्था → दो वचन
एकवचन, बहुवचन

(ञ) विशेषण व्यवस्था → संख्यावाची विशेषणों की बहुलता जैसे-एक, दो तीन, चारी इत्यादि।

इस तरह यह स्पष्ट है कि बुंदेली बोली अपनी विशिष्टता से हिंदी भाषा को समृद्धता प्रदान कर रही है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ग) पहाड़ी हिन्दी

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

पहाड़ी हिंदी, हिंदी की उपभाषा का एक प्रमुख वर्ग है। जिसके तहत दो बोलियाँ - कुमाउनी और गढ़वाली शामिल की जाती है।

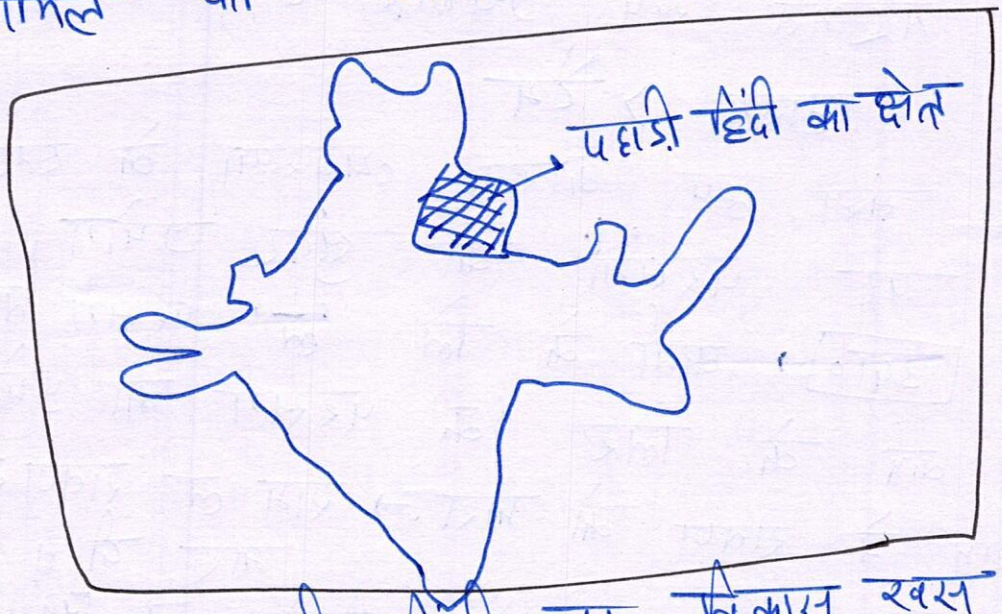

पहाड़ी हिंदी का विकास खस अपभ्रंश से माना जाता है। यह प्रमुख उत्तराखंड के नैनीताल, अल्मोड़ा, पौड़ी गढ़वाल, चमोली जैसे क्षेत्रों में बोली जाती है।

इसकी प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है :—

drishti | दृष्टि The Vision

(अ) ध्वनि संरचना → हिंदी की सभी ध्वनियाँ मिलती हैं। च, छ, ज इत्यादि की बहुल आवृत्ति।

(आ) अंग्रेजी के बहुत से शब्दों का तद्भव रूप प्रचलित है. जैसे →

टाइम > टैम

(इ) संज्ञा तथा कारक व्यवस्था के स्तर पर परसर्गों का सुंदर प्रयोग, उदा० → कर्ता के लि 'ल' परसर्ग तथा कर्म के लिए 'क' परसर्ग का प्रयोग।

राम ने रावण को मारा → राम ल रावण क मार दी।

(ई) लिंग व्यवस्था - लिंग परिवर्तन के नियम स्पष्ट हैं, लोक प्रयोगों पर आधारित हैं।

(उ) वचन व्यवस्था - दो वचन की व्यवस्था

एकवचन ← → बहुवचन

सारतः यह कहा जा सकता है कि पहाड़ी हिंदी अपनी विशिष्टता से हिंदी को समृद्धता प्रदान कर रही है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(घ) रहीम के साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'रहीम' अकबर के दरबारी व्यक्ति तथा सेनापति थे। हालांकि उनकी ख्याति मुख्यत: उनके साहित्य को लेकर है।

रहीम ने यूं तो अवधी (बरवै नायिका भेद) तथा ब्रज भाषा (दोहावली) को अपने काव्य का आधार बनाया है। हालांकि उनकी 'मदनाष्टक' जैसी रचना खड़ी बोली में ही लिखी गयी है।

रहीम के काव्य में सामान्यत: व्याकरणिक ढांचा ब्रज तथा अवधी में ही रखा गया है, खड़ी बोली केवल शब्द स्तर पर सक्रिय होती है →

"रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून,
पानी बिनु न उबरे, मोती मानुष चून।"

खड़ी बोली की दृष्टि से रहीम का यह दोहा काफी प्रसिद्ध है। भाषा वैज्ञानिकों ने इसका उल्लेख विविध

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

स्तरों पर किया है -

'रहिमन ओछे नरन सों,
बैर भली न प्रीति।
काटे चाटे स्वान के
दोऊ भाँति विपरीत।'

उपरोक्त दोहे में 'ओछे' 'सों' तथा 'दोऊ' के अलावा पूरी पंक्तियाँ खड़ी बोली में हैं।

'प्रदानात्मक' खड़ी बोली की दृष्टि से महत्वपूर्ण रचना है। उसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

"पकरि परम प्यारे, साँवरे को मिलाओ,
असल अमृत प्याला, क्यों न मुझको पिलाओ।"

सार यह है कि 19वीं शताब्दी के पूर्व खुसरो के बाद रहीम ही ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनकी खड़ी बोली की पूर्णता पाठक को विस्मय में डाल देती है।

(ङ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण-ग्रंथ

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

d drishti | दृष्टि The Vision

2. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'अवधी' का विकास 'अर्द्धमागधी अपभ्रंश' से माना जाता है। इसके आरंभिक प्रयोग के उदाहरण रोडा कृत 'राउलबेलि' तथा 'दामोदर पंडित' कृत 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' में मिलते हैं। हालांकि इसको साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित करने का श्रेय सूफी कवियों को जाता है।

ह्यातत्व है सूफी कवियों ने समन्वय की चेतना से प्रेरित होकर एक तरफ जहां हिंदू घरों में प्रचलित कहानियों को उठाया तो वहीं लोक भाषा अवधी को अपनी कविताओं का माध्यम बनाया, 'मुल्ला दाऊद' की रचना 'चंदायन' या 'लोरिकहा' में सबसे पहले अवधी का प्रयोग दिखता है। इसने एक झटके में अवधी को लोकभाषा के स्तर

से साहित्यिक भाषा के ओहदे पर स्थापित कर दिया। चंदायन की अवधी की विशेषता है उसकी मधुरता तथा लोक संस्कृति की मिठास। स्वयं मुल्ला दाउद कहते हैं-

"दाऊद कवि जो चांदा गायी,
जे रे सुना सो गा मुरझायी।"

आगे कुतुबन की 'मिरगावती' एक अन्य प्रसिद्ध रचना है जो अवधी की परंपरा को समृद्ध करती है। मलिक मुहम्मद 'जायसी' का आगमन अवधी को निर्विवाद रूप से एक साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित कर देता है। मलिक जायसी ने अवधी में कुल 15 रचनाओं की रचना की। 'पद्मावत' उनकी स्थायी ~~कीर्ति~~ कीर्ति का

drishti | दृष्टि The Vision

आधार है।

'पद्मावत' की भाषा की विशेषताओं पर नज़र डालें तो यह ठेठ अवधी है इसमें संस्कृत के शब्द नहीं आते हैं, प्राकृत अपभ्रंश के कुछ प्रयोग जैसे दीनिअर, पुहुमी इत्यादि को शामिल किये गये हैं, इसमें व्यक्त अवधी की सर्वप्रमुख विशेषता है लोक संस्कृति को व्यक्त करने की क्षमता उदा० के लिए जायसी ने 'दवंगरा' शब्द का प्रयोग किया है जिसका प्रयोग अवध क्षेत्र में बरसात की मौसम की पहली बारिश के लिए होता है।

जायसी ने अवधी को चित्रात्मकता, बिंबात्मकता तथा प्रतीकात्मकता जैसी विशेषताओं से जोड़ा, बिंबात्मकता का एक उदाहरण निम्नलिखित है –

"दहि कोयला भई कंत सनेहा,
तोला माँसु रहा नहीं देहा।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

"रक्त न रहा विरह तन जरा,
रती-रती होइ नैनन्ह धरा ॥"

जायसी की भाषा से विस्मृत होकर स्वयं आचार्य शुक्ल को कहना पड़ा - "जायसी की भाषा का माधुर्य निराला है, वह संस्कृत का माधुर्य नहीं, भाषा का माधुर्य है।"

आगे चलकर रीतिकालीन सूफी कवियों जैसे - [struck out] उस्मान, [struck out], नूर मुहम्मद (अनुराग बाँसुरी) इत्यादि के काव्य में तुलसी के प्रभावधीन समता की प्रवृत्ति बढ़ी है। नूर मुहम्मद की अनुराग बाँसुरी पर यह प्रभाव सबसे अधिक है।

कुल मिलाकर यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि सूफी कवियों ने अवधी को लोक भाषा के स्तर से उठाकर एक समर्थ साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित किया।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ख) हिन्दी में अनूदित लेखन पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अनूदित लेखन का आशय है- अन्य भाषाओं में रचित साहित्य का अनुवाद हिंदी भाषा में करना, इस प्रक्रिया से न केवल हिंदी का साहित्य समृद्ध होता है अपितु हिंदी क्षेत्र के लोग अन्य क्षेत्र के लोगों के विचारों से प्रभावित भी होते हैं।

अनूदित लेखन की परंपरा का आरंभ हेतु आधुनिक काल में भारतेंदु युग से दिखता है। स्वयं भारतेंदु ने अंग्रेजी के कई नाटकों जैसे 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' इत्यादि का अनुवाद हिंदी में किया।

आगे चलकर द्विवेदी युग तथा छायावाद के दौर में भी यह प्रवृत्ति बनी रही, किंतु अनूदित लेखन का वास्तविक विकास स्वातंत्र्योत्तर भारत

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

में देखा गया, स्वयं दिल्ली विश्वविद्यालय के तत्वाधान में अनेक किताबों का अनुवाद किया गया जैसे -

(1) रोमिला थापर - भारत का प्राचीन इतिहास

(2) विपिन चंद्र - आधुनिक भारत का इतिहास।

इसी तरह हिंदी के प्रसिद्ध समीक्षक नगेंद्र ने भी अनूदित लेखन की परंपरा को कई तरीकों से समृद्ध किया उन्होंने 'आई ए रिचर्ड्स' के कई निबंधों तथा 'लों जाइनस' के कई व्याख्यानों का हिंदी में अनुवाद किया,

अनूदित लेखन में निजी प्रकाशनों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही जैसे -

सोफी का संसार - राजकमल प्रकाशन

भारत, गांधी के बाद - रामचंद्र गुहा (पेंगिन प्रकाशन)

drishti | दृष्टि The Vision

शीत युद्ध के दौर में हिंदी में एक विशेष प्रवृत्ति दिखायी थी। इस दौर में साम्यवाद से संबंधित लेखन का हिंदी में अनुवाद हुआ, जैसे - कार्ल मार्क्स की 'दास कैपिटल' इत्यादि का।

वर्तमान समय में भी अनूदित लेखन की परंपरा लगातार आगे बढ़ रही है उदाहरण के लिए हाल ही में S जयशंकर की पुस्तक 'वाई भारत मैटर' का अनुवाद 'विश्वमित्र भारत' के रूप में किया गया है।

सार यह है हिंदी में अनूदित लेखन की परंपरा अत्यधिक सशक्त है जो आज भी हिंदी को प्रगति पथ पर अग्रसर कर रही है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ग) सर्वनाम और उसके भेदों पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है - सबका नाम, अर्थात् सर्वनाम वह है जो सबका नाम है। दूसरे शब्दों में संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त किये जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहा जाता है।

सर्वनामों के प्रयोग का लाभ यह है कि संज्ञाओं की बार बार आवृत्ति नहीं करनी पड़ती है। इसे एक उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हैं -

(1) गौरव ने कहा कि गौरव कल गौरव के शहर जायेगा।

↓ सर्वनाम ↓ सर्वनाम

↓

गौरव ने कहा कि वह कल अपने शहर जायेगा

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

हिंदी में सर्वनामों के छः भेद स्वीकार किये गये हैं -

पुरुष वाचक | प्रश्न वाचक | निज वाचक | निश्चय वाचक | अनिश्चय वाचक | संबंध वाचक

		एकवचन	बहुवचन
(1) पुरुष वाचक →	उत्तम पुरुष	मैं	हम
	मध्यम पुरुष	तू, तुम	तुम्हारा
	अन्य पुरुष	वह	वे, वेलोग

(2) प्रश्न वाचक - वे सर्वनाम जो किसी संज्ञा के संबंध में प्रश्नवाचकता को व्यक्त करते हैं।

उदा० → कौन आ गया ?

(3) निजवाचक - वे सर्वनाम जो किसी संज्ञा के संबंध में अपने पन का बोध कराते हो।

उदा० → यह मेरा अपना घर है।

(4) निश्चय वाचक - किसी संज्ञा की निश्चयात्मकता को व्यक्त करते हैं, प्रायः ईकारान्तता की प्रवृति।

उदा० → यही राम का घर है।

drishti | दृष्टि The Vision

(5) अनिश्चयवाचक – संज्ञा के संबंध में अनिश्चयात्मकता को व्यक्त करते हैं।

उदा० – • कोई आ रहा है।

(6) संबंध वाचक – दो भिन्न वाक्यों के बीच संबंध व्यापित करते हैं –

उदा० – जैसा करोगे, वैसा भरोगे।

सारतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी की संरचनात्मक व्यवस्था अत्यंत ही वैज्ञानिक व वस्तुनिष्ठ है। सरलीकरण की प्रक्रिया में यह हिंदी का अपना विकास है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

3. (क) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में गैर हिन्दीभाषी राज्यों के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) बिहारी हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) हिंदी गद्य के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

4. (क) मध्यकाल में प्रयुक्त साहित्यिक ब्रजभाषा में निहित गंभीर कलात्मकता के कारणों का अन्वेषण कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) उन्नीसवीं सदी में खड़ी बोली हिंदी के विकास में सामाजिक सुधार आन्दोलनों की भूमिका पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव दीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड - ख

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) केशव: कठिन काव्य के प्रेत

केशवदास, रीतिकाल में रीतिबद्ध काव्यधारा के शिखर रचनाकार हैं। मिश्रबंधु प्रभृति आलोचकों ने उन्हें रीतिकाल का प्रथम कवि कहा है। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - कविप्रिया, रसिकप्रिया इत्यादि। केशवदास के संबंध में यह कहा जाता है कि वे कठिन काव्य के प्रेत हैं, यह कहने के कारण निम्नलिखित हैं -

(1) केशव के काव्य में केवल काव्यशास्त्र से संबंधित रचनाएँ ही नहीं हैं, वे संस्कृत के प्रकांड विद्वान हैं तथा इतिहास, दार्शनिक, आचार्य इत्यादि की पदवी को एक साथ साध लेना चाहते हैं जिसके कारण उनका काव्य आम आदमी के लिए दुरूह हो जाता है।

(2) केशव के काव्य में पद-यूनता तथा वाक्य-यूनता की स्थिति व्याप्त है इसके कारण उनके काव्य की

drishti दृष्टि The Vision

बोधगम्यता उतनी नहीं रहती है। उदा० के लिए -

"सी, धी, री, धौ,
राम नाम सत धाम।"

(3) केशव दास छंदों के स्तर पर इतने अधिक प्रयोग किये हैं कि नामवर सिंह को उन्हें 'छंदों का अजायबघर' कहना पड़ा है।

इन सभी कारकों के प्रभावाधीन केशव का काव्य कठिन हो जाता है। हालांकि यह केशव के काव्य का एक पक्ष मात्र है। उनके काव्य का दूसरा तथा सफल स्तर वहां दिखता है जहां वे लक्षणग्रन्थ परंपरा तथा रामचंद्रिका में 'संवाद योजना' में ऐसे प्रतिमान स्थापित कर देते हैं जहां उनकी कोई बराबरी नहीं है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) नाटककार रामकुमार वर्मा

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

रामकुमार वर्मा, प्रसादोत्तर नाटक परंपरा के एक सशक्त नाटककार हैं। जब अन्य नाटककार प्रसाद प्रणीत ऐतिहासिकता तथा रोमानियत को ~~छोड़कर~~ छोड़ना चाह रहे थे वे तो रामकुमार वर्मा उन नाटककारों में से एक हैं जिन्होंने प्रसाद की परंपरा को ही आगे बढ़ाने का कार्य किया है।

रामकुमार वर्मा के नाटकों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है। पहला, ऐतिहासिक नाटक, जिसमें 'शिवाजी', 'चौमुखी महोत्सव' तथा 'अशोक का शोक' प्रमुख हैं तो वहीं दूसरा वर्ग, समकालीन नाटकों का है जिसमें 'पृथ्वी का स्वर्ग' तथा 'जय बांग्ला' महत्वपूर्ण है।

'शिवाजी' नाटक में शिवाजी के व्यक्तित्व के औदार्य तथा महानता को स्थापित करते हैं तो वहीं, 'चौमुखी महोत्सव' में चंद्रगुप्त की महानता

drishti | दृष्टि The Vision

को स्थापित करते हैं, 'अशोक का शोक' उनके सबसे सफल नाटकों में से एक है, जिसमें 'चारुमित्रा' नामक महिला की सेवा से अशोक के हृदय परिवर्तन की कहानी को दिखाया गया है।

'पृथ्वी का स्वर्ग' नामक नाटक में उन्होंने हमारे समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार की समस्या को उठाया है तो वहीं 'जय बांग्ला' नामक नाटक में बांग्लादेश की स्वतंत्रता, भारत का सहयोग, मुक्ति वाहिनी के संघर्ष इत्यादि को चित्रित किया गया है।

सारतः रामकुमार वर्मा ने हिंदी नाटकों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'अंधायुग' नाटक का महत्त्व।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'अंधायुग' नाटक धर्मवीर भारती की स्थायी कीर्ति का आधार है। यह गीतिनाट्य के रूप में हिंदी की सबसे सफल रचनाओं में से एक है

यह नाटक 'द्वितीय विश्वयुद्ध' की पृष्ठभूमि में लिखा गया है। इस नाटक की कथा महाभारत के कर्ण की कहानी पर आधारित है जो समकालीन युद्ध की विसंगतियों को उकारने का प्रयास करती है।

'अंधायुग' नाटक का महत्व इसके संवेदना के स्तर पर यह है कि यह दर्शाने का प्रयास करता है कि युद्ध में अंततः जीत किसी की नहीं होती है, नैतिक दिखने वाला पक्ष भी अनैतिक प्रथाओं से युक्त होता है तो वहीं अनैतिक पक्ष में भी

drishti | दृष्टि The Vision

कुछ, नैतिक पक्ष होते हैं, इस नाटक का एक उदाहरण अत्यधिक प्रसिद्ध है-

"मैं रथ का टूटा
पहिया हूँ
किन्तु मुझे छोड़ो मत
क्योंकि इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड़ जाने पर
क्या पता
सच्चाई मेरा सहारा ले,"

यह नाटक अस्तित्ववादी भावबोध, निरर्थकता, आधुनिक भावबोध, संशय इत्यादि से संपृक्त है जो अंततः लघु मानव की विडंबना को दर्शाता है।

इसका महत्व यह भी है कि इसने रंगमंच को अत्यधिक योगदान दिया है।

सार यह है कि अंधायुग अपनी संवेदना तथा शिल्प के स्तर पर और रंगमंचीयता का अनन्य महत्व का अधिकारी है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(घ) निराला की कविता 'तुलसीदास' का 'प्रतिपाद्य'

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'राम की शक्ति पूजा' के अलावा 'तुलसीदास' वह रचना है जो निराला को अत्यधिक सम्मान का अधिकारी बनाती है।

'तुलसीदास' रचना में निराला ने तुलसीदास की कहानी के माध्यम से अपने समय की पराधीनता से निपटने के संकेत प्रस्तुत किये हैं। रचना की शुरुवात ही इन पंक्तियों से होती है -

"उर के आसन पर शिरस्त्राण
शासन करते हैं मुसलमान।"

ये प्रतीकात्मक रूप से मुगल शासन की पराधीनता, ब्रिटिश शासन के अधीन पराधीनता को व्यक्त करती है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

रचना में बताया गया है कि तुलसीदास का विवाह जब एक सुंदर कन्या से हुआ तो वे विषय-वासना में इतना ग्रसित हो गये कि अपने दायित्वों को भूल गये। जब तुलसीदास की पत्नी अपने मायके चले गयी तो तुलसी भी उनके पीछे-पीछे मायके ही पहुँच गये। अंतत: पत्नी द्वारा तिरस्कार किये जाने से उनकी आँखें खुलती हैं और वह दायित्व बोध से युक्त होकर साहित्य सृजन में आगे बढ़ते हैं।

अत: यह रचना प्रतीकात्मक रूप से अपने समय के नागरिकों तथा साहित्यकारों को यह प्रेरणा प्रदान करती है कि राष्ट्र चेतना, दायित्व बोध से प्रेरित होकर एक सुंदर समाज का निर्माण करें।

drishti | दृष्टि The Vision

(ङ) तारसप्तक

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'तारसप्तक' पत्रिका का प्रकाशन सन् 1943 में अज्ञेय द्वारा किया गया। इसके प्रकाशन के साथ ही हिंदी साहित्य में प्रयोगवाद का आरंभ माना जाता है।

तारसप्तक में अज्ञेय ने निम्नलिखित कवियों की रचनाओं को स्थान दिया - रामविलास शर्मा, मुक्तिबोध, अज्ञेय, गिरिकुमार, नेमिचंद्र जैन, प्रभाकर माचवे तथा भारत भूषण अग्रवाल।

इस पत्रिका का महत्व यह है कि इसने विविध स्तरों पर हिंदी संवेदना तथा शिल्प को नया आयाम देने का प्रयास किया। संवेदना के स्तर पर अज्ञेय ने कहा कि कविता का उद्देश्य प्रगतिवादियों की तरह सामाजिक परिवर्तन करना नहीं है अपितु यह तो व्यक्ति को समाज से अधिक एक व्यक्ति को संस्कारित कर सकती है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इसके अतिरिक्त विचारधारा में की यांत्रिकता से बचते हुए स्वप्न के सत्य की खोज पर बल दिया गया, शहरी मध्यवर्ग, शहरीकरण से उत्पन्न अजनबीपन, बौद्धिकता से जुड़ी हुई रोमांचित पर बल दिया गया।

शिल्प के धरातल पर इस पत्रिका ने कला पर अधिक बल दिया, क्योंकि इन कवियों का मानना था कि कला हमारी अभिव्यक्ति ही नहीं चिंतन को भी सीमित करती है। इसके अतिरिक्त बिंब, प्रतीक, लाक्षणिकता इत्यादि पर भी बल दिया गया।

सारतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी संवेदना को प्रगतिवाद से नयी कविता तक पहुँचाने में प्रयोगवाद अथवा 'तार सप्तक' का महत्वपूर्ण योगदान है।

6. (क) गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति-चेतना के संदर्भ में विनयपत्रिका का अनुशीलन कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) घनानंद के काव्य-शिल्प की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) निराला की प्रगति-चेतना पर विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

7. (क) हिंदी की प्रगतिवादी और प्रयोगवादी काव्यधाराओं की तुलना कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रगतिवाद तथा प्रयोगवाद हिंदी कविता के इतिहास के दो महत्वपूर्ण आंदोलन हैं। प्रगतिवाद का समय 1936 से 1943 तक माना जाता है तो वहीं प्रयोगवादी काव्यधारा का प्रचलन 1943 से 1951 तक रहा।

प्रगतिवादी काव्यधारा	प्रयोगवादी धारा
(1) समय → 1936 - 1943	समय → 1943-51
(2) संवेदना →	(2) संवेदना
(क) मार्क्सवाद का साहित्यिक संस्करण है।	(क) विचारधाराओं के यांत्रिकता का विरोध करते हुए, T.S. इलियट तथा फ्रायड से वैचारिक प्रभाव ग्रहण करता है।
(ख) साहित्य का उद्देश्य है शोषण, दमन का विरोध तथा पूंजीवाद का अंत।	(ख) साहित्य के घोषित उद्देश्य का समर्थन नहीं करते।

drishti | दृष्टि The Vision

उदा० →
"तू है मरण, तू है रिक्त
तू है व्यर्थ
केवल ध्वंस, एक तेरा
एक अर्थ"

(ग) वंचित वर्गों के प्रति सहानुभूति

उदा० →
"मैंने उसको जब-जब देखा
लोहा देखा
लोहा जैसे गलते देखा
तपते देखा ढलते देखा।"

(घ) ग्रामीण प्रकृति केंद्र में है।
"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास।"

(ख) शिल्प के स्तर पर

(क) वस्तु का महत्व रूप का नहीं

(ग) शहरी मध्यवर्ग की भौतिकता से जुड़ी हुई रोमानियत केंद्र में है।

उदा० →
"फूल को प्यार करो
और झरे तो झर जाने दो"

(घ) शहरी दृष्टि से प्रकृति को देखा गया।
"चिड़िया उड़ी
काँपी पत्ती
थिर हो गई।"

शिल्प के स्तर पर

(क) शिल्प को स्वायत्त महत्व दिया है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ख) बिंब, प्रतीक अप्रस्तुत इत्यादि पर बल नहीं।	(ख) बिंब, प्रतीक, अप्रस्तुत पर अत्यधिक बल, नये उपमानों की खोज का प्रयास
(ग) सहज भाषा पर बल	(ग) लाक्षणिक तथा तराशी हुई भाषा का प्रयोग

इन अंतरों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि प्रयोगवाद, प्रगतिवाद के विरोध में शुरू हुआ आंदोलन था हालांकि यह पूरा सत्य नहीं है।

प्रयोगवाद के आंदोलन में कुछ मार्क्सवादी कवि जैसे मुक्तिबोध, रामविलास शर्मा इत्यादि भी शामिल है इस तरह यह कहा जा सकता है कि प्रयोगवाद, प्रगतिवाद का ही कुछ परिवर्तित स्वरूप है।

प्रयोगवाद में दो धाराएं देखी जाती हैं -

- अस्तित्ववाद से प्रभावित आधुनिक भावबोध की धारा
  ↓
  अज्ञेय शिखर कवि हैं,
- समाजनिष्ठ धारा
  ↓
  मुक्तिबोध शिखर कवि हैं।

इस तरह यह स्पष्ट है कि प्रगतिवाद, प्रयोगवादी काव्यधारा में भी विद्यमान था इसलिए इनमें विरोध का संबंध नहीं कहा जा सकता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) पद्माकर के शृंगार-वर्णन पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

पद्माकर रीतिकाल के रीतिबद्ध काव्यधारा के एक सशक्त रचनाकार हैं; रीतिकाल की शृंगारिकता तथा दरबारी चमक दमक का निदर्शन इसके काव्य में प्रमुख रूप से मिलता है। उदा० - पद्माभरण, जगद्विनोद, गंगालहरी, रीतिकाल की मूल प्रवृत्ति के अनुरूप इनका काव्य अधिकांशतः शृंगार केंद्रित है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित कविता में विलास के सारे उपादानों का वर्णन निम्नलिखित रूप में किया गया है-

"गुलगुली गिल में गलीचा है गुनिजन हैं,
चाँदनी चिक है चरागन की माला है।
कहै पद्माकर जो गजक गिला है सजी,
सेज है सुरा है सुराही है और प्याला है।"

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इसे अतिरिक्त पद्माकर का काव्य दरबारी माहौल के भीतर राजाओं की अतिशयोक्ति पूर्ण प्रशंसा भी करता है। क्योंकि रीतिकाल में काव्य का उद्देश्य ही था - प्रशंसा तथा धन की प्राप्ति करना -

'संपत्ति सुमेर की, कुबेर की जो पावेताही
तुरत लुटावत बिलंब उर धारी न।"

इसके अतिरिक्त पदों की अतिशयोक्ति पूर्ण चित्र भी खींचे गये हैं -

"उपबकें, तपबकें धड़कें मन एँ,
पलैं चिल्लिका सी भड़कें जहाँ एँ।"

जीवन के अंतिम समय में
जब पद्माकर को अत्यधिक श्रृंगार
वर्णन के कारण पश्चाताप हुआ
होगा तो अंत में उन्होंने राधा-
कृष्ण से भक्ति संबंधी पदों की
की रचना की है।

सार यह है कि रीतिकाल
की सभी प्रवृत्तियाँ चाहे वो श्रृंगार
की हो या भक्ति की पद्माकर
के काव्य में विद्यमान हैं, यही
कारण है कि उनकी श्रेष्ठता की
टकराहट बिहारी तथा देव जैसे
कवियों से होती है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में निहित 'राष्ट्रीयता की चेतना' पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'उत्तरछायावाद' में उपित हुई राष्ट्रीय सांस्कृतिक कालधारा के शिखर कवि के रूप में माखनलाल चतुर्वेदी समादृत हैं। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं- हिम किरिणी, हिमतरंगिणी तथा पुष्प की अभिलाषा।

पुष्प की अभिलाषा उनकी राष्ट्रीयता की चेतना से संपृक्त सर्वोत्कृष्ट कविता है, जिसके एक पुष्प के माध्यम से देश पर मर मिट जाने का भाव उत्पन्न हुआ है।

ध्यातव्य है यह वह दौर था जब राष्ट्रीय आंदोलन अपने चरम रूप में स्थापित था।

ऐसे समय में जब छायावादी काव्य रहस्यवादी, प्रतीकवाद इत्यादि में उलझा हुआ था, माखनलाल चतुर्वेदी उन गिने चुने रचनाकारों में से एक हैं जिन्होंने स्वाधीनता संघर्ष को सीधी अभिव्यक्ति दी-

"चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गुंथा जाऊँ
चाह नहीं प्रेमी माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ"

माखनलाल चतुर्वेदी सीधे तौर पर युवाओं, आम जनमानस को उद्बोधित करते हुए लिखते हैं -

"मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जाते वीर अनेक।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इस तरह यह स्पष्ट है माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्र के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा देता है।

राष्ट्रीयता की प्रखर चेतना के कारण ही माखन लाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त के बाद 'राष्ट्रकवि' कहलाये जाते हैं। हालांकि गुप्त जी के वहाँ सांस्कृतिक चिंताएँ अधिक थी किंतु, चतुर्वेदी जी ने स्वाधीनता संघर्ष को स्पष्ट अभिव्यक्ति दी है।

सारतः माखन लाल चतुर्वेदी हिंदी की राष्ट्रीय चेतना के प्रतिनिधि कवियों में एक हैं जिनका योगदान अविस्मरणीय है।

drishti | दृष्टि The Vision

8. (क) छायावादी कविता की 'सौंदर्य-चेतना' की उदात्तता पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

छायावादी कवियों की सौंदर्य चेतना हिंदी साहित्य में अत्यधिक महत्व रखती है। इस काव्य में जीवन के तीन तत्वों - सत्यम् शिवम्, सुंदरम् में से सुंदरता को अत्यधिक महत्व दिया है हालांकि वह सत्य तथा शिव से युक्त है।

छायावादी काव्य में सौंदर्य चेतना कई स्तरों जैसे कि प्रकृति, नारी, मानव, चराचर जगत के स्तर पर व्यक्त हुई है हालांकि, इन सभी में मानव की सुंदरता सर्वोच्च महत्व की अधिकारी है।

"सुंदर है सुमन विहग सुंदर
मानव तुम सबसे सुंदरतम।"

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यहाँ प्रकृति की सुंदरता को कई स्तरों पर व्यक्त किया है। उपा० के निर्मला ने प्रकृति का मानवीकरण निम्न रूप में किया है -

'मेघमय आसमान से,
उतर रही है
संध्या सुंदरी परी सी
धीरे - धीरे - धीरे।"

(B) यहाँ प्रकृति को नारी के सौंदर्य से भी अधिक महत्व दिया गया है -

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले तेरे बाल जाल में
कैसे उलझा दूँ लोचन॥"

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

नारी सौंदर्य की बात करें तो वह रीतिकाल की तरह केवल देह, भोग, विलास तक सीमित नहीं है अपितु यहाँ सौंदर्य में लज्जा का, प्रेम की पवित्रता का। उदाहरण के लिए निराला के काव्य में नारी सौंदर्य निम्न रूप में व्यक्त हुआ है -

"तुम कनक किरण के अंतराल में,
लुक छिप कर चलते हो क्यों,
हे लाज भरे सौंदर्य बता दो,
मौन बने रहते हो क्यों?"

"तुम्हारे छूने में था प्राण
संग में पावन गंगा स्नान"

कामायनी में तो श्रद्धा का व्यक्तित्व ही भावनाओं का मूर्त रूप है। उसका बाह्य सौंदर्य

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तो प्रभावी है ही, आंतरिक सौंदर्य की महत्ता का अधिकारी है -

" हृदय की अनुकृति बाह्य उदार
एक लंबी काया उन्मुक्त। "

सार यह है कि छायावादी सौंदर्य हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है जो कि केवल नारी तक सीमित नहीं होता अपितु, चर-अचर जगत में भी व्यक्त होता है।

(ख) मोहन राकेश के नाटक 'आधे-अधूरे' के रचना-वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'आधे अधूरे' मोहन राकेश
के साहित्य कर्म का ही नहीं
अपितु हिंदी रंगमंच के चरम
रूप का उदाहरण है।

यह लेखन के दौर
में लिखित यह नाटक मोहन राकेश
के पूर्व में लिखित नाटकों 'आषाढ़ का एक दिन' तथा
'लहरों के राजहंस' से कई अलग
है, जहाँ पूर्ववर्ती नाटक ऐतिहासिक
कथा को आधार बनाकर लिखे
गये हैं तो वहीं 'आधे अधूरे'
समकालीन यथार्थ की सीधी अभिव्यक्ति
करता है।

नाटक में दो प्रमुख
चरित्र हैं- सावित्री तथा उसका
पति महेंद्रनाथ। नाटक में दिखाया

drishti | दृष्टि The Vision

गया है कि उनकी साथ में बिल्कुल भी तालमेल नहीं है। लेकिन बावजूद इसके साथ में जीवन जीने हेतु अभिशप्त है।

सावित्री, कई बार अन्य पुरुषों से टकराने का प्रयास करती है लेकिन बाद में उसे पता चलता है कि प्रत्येक व्यक्ति एक अधूरेपन के साथ अपना जीवन यापन कर रहा है। वह कहीं भी पूर्णता नहीं पाती है। और जाकर इसी अधूरेपन से शुरू होकर अधूरेपन पर ही समाप्त हो जाता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

राकेश जी के इस नाटक की मुख्य विशेषता यह है कि रंगमंच पर अत्यधिक सफल नाटक है। इसमें अनंत की कम दृश्य, पर्याप्त रंगसंकेत, एक ही व्यक्ति से पाँच लोगों का अभिनय जैसी विशेषता इसे रंगमंच पर सर्वाधिक सफल नाटकों में से एक बनाती है।

सारत: यह कहा जा सकता है कि अस्तित्ववादी भावबोध पर रचित यह नाटक जहाँ आधुनिक जीवन की सच्चाई व यथार्थ को उजागर करता है तो वहीं हिंदी की मौलिक रंगमंच की खोज का प्रयास भी करता है।

(ग) 'प्रगतिशील चेतना' की दृष्टि से 'नाथ-साहित्य' पर विचार करते हुए उसका साहित्यिक महत्त्व बताइए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

आदिकालीन साहित्य की धार्मिक काव्य प्रवृत्तियों में नाथ साहित्य का एक विशेष महत्व है। नाथों को सिद्ध परंपरा का ही विकसित रूप माना जाता है। गोरखनाथ इसके प्रवर्तक हैं। नाथों की कुल संख्या नौ मानी गयी है जिनमें - गोरखनाथ, चर्पटीनाथ तथा जलंधरनाथ इत्यादि महत्वपूर्ण हैं।

'नाथों की साहित्य' की प्रमुख विशेषता है इनकी प्रगतिशीलता। यथार्थ है जब तत्कालीन सामंती समाज भोग, विलास, मदिरापान इत्यादि में डूबा हुआ था और सिद्ध की धार्मिकता के नाम पर मत्स्य, मदिरा, मैथुन इत्यादि

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

को बढ़ावा दे रहे ऐसे में नाथों द्वारा एक संयमित जीवन जीने की प्रेरणा देना अत्यंत विस्मृत करता है। उदा० के लिए-

"जोगि सोई जाणिये जग तें रहे उदास
तत निरंजन पाइये कहै मछंदरनाथ॥"

इसके अतिरिक्त नाथों की प्रगतिशीलता का दूसरा प्रमाण यह है कि इन्होंने तत्कालीन धार्मिक आडंबरों, कर्मकांडों पर चोट की और सहज शून्य की अवधारणा तथा हठयोग जैसी प्रगतिशील साधनाओं (तत्कालीन समय) पर बल दिया, गोरखनाथ कहते हैं-

"जो लख पातरि आगे नाचे,
पीछे सहज अखाड़ा,
तब ऐसो मन ले जोगि खेलें
अंतर बसे भंडारा॥"

drishti | दृष्टि The Vision

Space for Rough Work

हालांकि ~~स्त्रियों~~ को त्याज्य मानना जैसी प्रवृत्तियां भारी उनकी प्रगतिशीलता की सीमा है।

कुल मिलाकर सार यह है कि नाथों ने तत्कालीन परिवेश में स्पष्ट रूप से प्रगतिशीलता दिखाई हालांकि वर्तमान में हम उनकी कुछ मान्यताओं से असहमत हो सकते हैं।